ओसवाल महिमा के परम सहयोगी

प्रधान संरक्षक

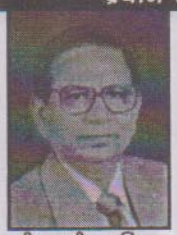

श्री महावीर कास्टिया
जोधपुर

प्रधान संरक्षक

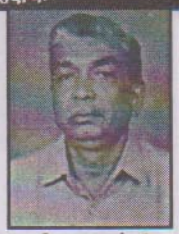

श्री. भैरूलाल संकलेचा
पाली मारवाड़

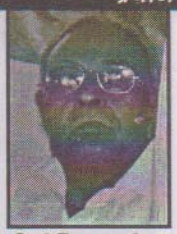

श्री गोविन्दचन्द मेहता
जोधपुर

प्रधान संरक्षक

श्री भैरचंद गोगड़
पाली मारवाड़

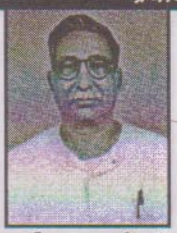

श्री शूद्रराज लोढ़ा
जोधपुर

श्री बी. एम. कोठारी
जोधपुर

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

❖ **श्री मोती लाल तेजावतः** राजस्थान प्रांत के उदयपुर अर्बुदाचल जिले में कोल्यारी ग्राम में श्री नन्दलाल तेजावत के गृहागंन में 8 जुलाई 1887 को जन्मे **श्री मोतीलाल तेजावत**, ने साधारण शिक्षा प्राप्त कर झाड़ोल ठिकाने के कामदार बन गये। कुछ ही समय में आदिवासियों के दुःख देखकर आपने कामदारी छोड़ दी। सन् 1920 में आपने मातृकुण्डिया में आदिवासियों का सम्मेलन कर 'एकी आन्दोलन' की नींव डाली। वर्ष 1921 में जागीरदारों द्वारा ली जाने वाली बैठ बैगार व लाग बागा के प्रश्नों को लेकर भीलों को संगठित किया तथा उनका एक विशाल सम्मेलन गुजरात के विजय नगर राज्य के नीमड़ा गांव में आयोजित किया। राज्य प्रशासन इस जनजाति आन्दोलन को सत्ता के विरूद्ध मानता था। अतः मेवाड़ व अन्य पड़ौसी राज्यों की सेना को एकत्रित कर भीड़ को घेर कर गोलियां चलाई जिसमें 1200 भील मारे गये व हजारों घायल हुए तेजावत को घायल अवस्था में वहां से सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। 8 वर्ष तक भूमिगत रहने के बाद 4 जून 1929 को गांधी जी की सलाह पर स्वंय द्वारा गुजरात की ईडर पुलिस के समक्ष खेड़ बह्मा में समर्पण कर दिया। वहां से इन्हे उदयपुर लाकर करीब सात वर्ष तक केन्द्रीय कारागार में रखा गया। रिहा होने के पश्चात् इन्हें उदयपुर में नजरबंद कर दिया गया। 22 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान आपको पुनः बंद कर दिया गया। वर्ष 1945 में रिहाई तो हो गई परन्तु उदयपुर से बाहर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इनके घर के बाहर पुलिस का कड़ा पहरा बिठा दिया गया जो देश के स्वतंत्र होने तक जारी रहा। इन्होनें अपना शेष जीवन समाज सेवा में व्यतीत किया। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेवानी श्री बलवन्तसिंह मेहता के अनुसार

" खोजे सब इतिहास को, खोजा राजस्थान
तेजावत सम ना मिला, जनजाति का प्रान"

ऐसे वीर स्वतंत्रता सेनानी को ओसवाल महिमा परिवार का शत् शत् नमन वंदन।

ओसवाल महिमा परिवार से

❖ साहित्यकार एवं सिघानिया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **प्रो. डॉ. सोहनराज तातेड़** को दीर्घ अवधि से समाज को दी जा रही शैक्षणिक एवं सामाजिक सेवाओं के लिए वर्ड क्लीन एनवॉयरमेंट काफ्रेंस की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

❖ **सुनहरा अवसर :** ओसवाल महिमा कार्यालय द्वारा **ओसवाल स्थापना दिवस** के शुभप्रसंग पर ओसवंश के गौरवशाली इतिहास पर निम्न पुस्तकें लागत मूल्य पर बिना डाक प्रभार लिए भेजे जाने की सुविधा 31 अगस्त 2017 तक रखी गई है। **लेखक चंचलमल लोढ़ा :** ओसवंश का इतिहास 200/– रू, ओसवंश की कुल देवियां 100/– रू, हिस्ट्री ऑफ ओसवाल अंग्रेजी 400रू। **लेखक मांगीलाल भूतोड़ियाः** इतिहास की अमरबेलः ओसवाल प्रथम खण्ड 175/– रू व द्वितीय खण्ड 225/–रू। राशि ओसवाल महिमा के पंजाब नेशनल बैंक खाते में 4145009400002065 में जमा करवा कर मों. 9414247785 पर सूचित करे या चैक द्वारा भिजावें। पुस्तके सीमित मात्रा में उलब्ध है अतः पहले आओ पहले पाओं के आधार पर भेजी जायेगी।

❖ **स्वर्ण अवसर :** ओसवाल महिमा से अधिक से अधिक बन्धु जुड़े इस दृष्टि से **ओसवाल स्थापना दिवस** पर आजीवन सदस्ता राशि1100/– के स्थान पर 1000/– रू 31 अगस्त 2017 तक स्वीकार की जायेगी।

पुस्तक प्राप्ति साभार : सिरोही व पाली जिले के जैन मंदिर लेखन व संकलन श्री मोहनलाल बोल्या, 37 शंति निकेतन कॉलोनी, बेदला – बड़गांव लिंक रोक उदयपुर 313011 पृष्ठ 460 सहयोग राशि 400/–रू।

अर्बुदाचल परिक्रमा के प्राचीन महातीर्थ,संकलक एवं सम्पादक संघवी विमलचंद आनंदराज वेदमुथ्था, प्रकाशक जय जिनेन्द्र सेवा संघ, पुणे, पृष्ठ 74